ISSN: 2249-894X Impact Factor :3.8014(UIF) Volume - 6 | Issue - 1 | October - 2016

Review Of Research

मृदुला गर्ग और बदलती हुई नारी

डॉ. सुभाष दलसिंग जाधव

हिंदी विभाग,संत रामदास महाविद्यालय,घनसावंगी,जिला-जालना.

प्रस्तावना :

महिलाओं के विकास के लिए अब तक की यात्रा में किये गए तमाम प्रयत्नों का परिणाम यह हुआ है कि आज स्त्री समाज के केंद्र में आ रही है | उसकी विलक्षण प्रतिभा एवं बुद्धि को देख कर पुरुष भी अचंभित होकर उसके महत्व को स्वीकार रहा है | समाज और साहित्यकार धीरे-धीरे इसकी इस प्रतिभा की तारीफ़ कर रहे है | हिंदी कथा साहित्य में महिलाओं की इस शिरकत ने उन्हें हर जगह एक नया और संतुष्टि वाला मकाम दिया है | भवदेव पाण्डेय ने इस विषय का समर्थन करते हुए लिखा है कि–"आज कम से कम हिंदी कथा लेखन में 'पुरुषांत युग' का आरम्भ हो गया है |" मूल तथ्य को समझेगे तो जानेंगे कि महिला कथा साहित्य अपने मजबूत पाँव जमा चूका है | इन्ही कथा साहित्यकारों में मृदुला गर्ग भी एक ऐसी कथा लेखिका हैं जो पुरुष वर्चस्वी समाज के विरोध में नारियों के संघर्ष का संचालन कर रही है | वह स्त्री मुक्ति का सम्बन्ध 'स्त्रियों की सोच की मुक्ति' के साथ जोड़ती है | वह स्त्री को पुरुष से मुक्त नहीं करना चाह रही है; बल्कि स्त्री को पुरुष के बराबर लाना चाह रही है | इस प्रयास में कभी-कभी ऐसा लगता है कि वे स्त्रियों को इतना ऊपर उठा रही है कि सभी नारियां अपने कर्तव्य के कारण कहीं-कहीं पुरुषों से आगे भी निकल रही है | मृदुला जी का साहित्य सिर्फ स्त्री की नई छवि गढ़ने वाला साहित्य नहीं है, बल्कि लेखिका अपनी सीमित दुनिया से बाहर निकल कर अपने युगीन प्रश्नों से भी जूझती हुई प्रतीत हो रही है | लेखन को उच्छेदन कर्म मानने वाली लेखिका वर्तमान के प्रति तल्ख़ प्रतिक्रियाएँ दे रही है | जिस व्यवस्था में वे जी रही है उस व्यवस्था को चुनौती देते हुए नई व्यवस्था का निर्माण करने के लिए वे छटपटाती नज़र आ रही है |

वे जिस नजरिए से दुनिया देखती है वह स्त्री की एक तीक्ष्ण और चोट खायी हुई नज़र है | इसके लिए ढेर सारे प्रमाण दिए जा सकते हैं जैसे–"व्यापक फलक पर स्त्री की मादा छवि से अभिभूत होने का परिणाम प्रवक्ता के चयन में प्रकट होता है | प्रेमचंद की तरह आज भी कोई लेखक या लेखिका, समाज के अंतर्विरोधों, विसंगतियों, जटिलताओं

और विषमताओं का चित्रण करता

है तो प्रमुख प्रवक्ता के रूप में, पुरुषों को लेता है |" प्रस्तुत वाक्य में पुरुष केंद्रीय समाज व्यवस्था के संबंधों पर प्रकाश डाला गया है; जहाँ प्रमुख प्रवक्ता पुरुष ही है | हम कह सकते हैं कि इन सभी लेखिकाओं ने संसार भर की सभी स्त्रियों के लिए एक तीसरी दुनिया ही बनाई है, इसी तीसरी दुनिया में ये सम्बन्ध बदल रहे हैं | आज स्त्री समाज की प्रमुख प्रवक्ता भी बन रही है | लेखिका मृदुलाजी वर्तमान से असंतुष्ट है | युग के साथ चलते-चलते उन्होंने भिन्न-भिन्न विषयों पर कहानियां लिखी | इनके साहित्य में तत्कालीन समाज जीवित हो उठता है | जीवन की अनुभूतियाँ, संवेदनाएँ, पीडाएं और खट्टी-मीठी यादों का संगम लिए हुए इनका कथा साहित्य है | इनका भोगा हुआ समय कहानी का सम्वैध्य होने के कारण इनकी प्रतिक्रियाएं एक तीखापन लिए हुए हैं, जो पाठकों को सालता है | वाचन के बाद एक टीस उठती है और पाठक बेचैन हो उठता है | ये अपने अधिकाँश साहित्य में नारी को केंद्र में रखती है | लेखिका ने नारी के सारे पुराने मुखौटे उतार दिए हैं और उसकी मूल छवि को शक्तिशाली बना दिया है | इन्होनें नारी चेतना में इतना परिवर्तन किया कि दूर-दूर तक पुरानी स्त्री कहीं नज़र ही नहीं आती है | इनकी सभी नारियां परम्परागत सोच से मुक्त हो चुकी है | लेखिका अपनी कहानियों में नारी की हर एक छोटी से छोटी समस्या को तीक्ष्ण नजर से देखती है तथा दाम्पत्य तनाव के सूक्ष्म सन्दर्भों को पकडती है | स्त्री को पूरी तरह से बदल कर उसकी नई छवि गढ़ती है | समकालीन सामजिक और सांस्कृतिक मूल्यों पर प्रश्न चिन्ह लगाती है | ये अपने युग से सचेत हैं | ये जानती हैं कि नारी अगर साधी-भोली और पति को परमेश्वर मानने वाली है तो यह अहंकार से भरा हुआ पुरुष इसे कभी भी सुख से जीने नहीं देगा | ये देखती है कि मनुष्य आज परम्परागत संवेदना में जीने के लिए इनकार कर रहा है | तो प्रश्न यह है कि क्या स्त्री मनुष्य नहीं है...? फिर उस पर ही क्यों सारी परम्पराओं और रीति-रिवाजों का बोझ लाद दिया जाता है...? इस संवेदना में इस 'स्त्री मनुष्य' को अपना व्यक्तित्व दबा सा नजर आ रहा है | लेखिका ने इन सभी बातों को महसूस किया है, इसलिए वे परम्परागत मूल्यों को चुनौती देती है | ये मूल्य जो ख़ास कर सिर्फ और सिर्फ नारियों के लिए होते हैं | इन मूल्यों के तहत नारियों को छटपटाते हुए इन्होने देखा है शायद इसीलिए इनके साहित्य में नारी की बदलती हुई तस्वीर हमें दिखाई देती है |

नारी की बदली हुई तस्वीर

यह आज की स्त्री...है... यह "आँचल में दूध और आँखों में पानी" वाली नहीं है, और ना ही "पियूष स्त्रोत सी जीवन में बहने वाली" है | बल्कि यह स्त्री स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर, अपनी अस्तित्वगत चेतना को महसूस करने वाली, गर्वीली, अहंकारयुक्त, व्यस्त और सामर्थ्यशाली स्त्री है | अब इसे कोई निग्लेट नहीं कर सकता है अगर ऐसा कोई करता भी है तो यह उसे करारा जवाब देती है | यह स्त्री अत्यधिक दबंग और साहसी है | अब समाज को इसके इस नए अस्तित्व को स्वीकारना भी होगा | यह मुर्दा रुढियों को तोडती है, साथ ही अपने स्वाभिमान की रक्षा करने के लिए अकेली रहना भी इसे मंज़ूर है | अपने अस्तित्व की रक्षा भी अब वह स्वयं करने के लिए मजबूत है, और इसके लिए अब वह किसी भी तरह का समझौता भी नहीं करती है | यह पुरुष के आधीन नहीं बल्कि स्वाधीन जीवन जीने की चाह रखती है | इन सभी कार्यों में इसे किसी भी प्रकार की आत्मग्लानि नहीं है | वो यह चाहती है कि वो वस्तु ना समझी जाए बल्कि इंसान बन कर एक अच्छा जीवन जिए | यही है मृदुला गर्ग की बदली हुई स्त्रियाँ...जो कभी छटपटाती हैं, तो कभी

रुढियों को तोड़ती हैं | ऐसी स्त्रियों की तस्वीर जो इनकी अधिकाँश कहानियो में उभर कर आई हैं | इस तरह से है....

"हरी बिंदी" कहानी की 'वह', "खरीददार" कहानी की 'नीना', "खाली" कहानी की 'नई किरायदार', "वितृष्णा" कहानी की 'शालिनी', "तीन किलों की छोरी" कहानी की 'शारदा बेन', "चक्कर घिन्नी" कहानी की 'लेखा', "रेशम" कहानी की 'हेमवती', "शहर के नाम" कहानी की 'लड़की', "मीरा नाची" कहानी की 'मीरा', "बर्फ बनी बारिश" कहानी की 'बिन्नी', "छत पर दस्तक" कहानी की 'नलिनी', और "समागम" कहानी की 'अमला' इत्यादि नारियां बिलकुल नए रूप में प्रस्तुत हुई है | "कितनी कैदें" कहानी संग्रह की कहानी 'कितनी कैदें' में 'मीना' नशे की हालत में सामूहिक बलात्कार की शिकार होती है, नतीजन उसमे एक प्रकार का ठंडापन आजाता है | वह एक तरह से कुंठाओं की, विचारों की कैद में रहने लगती है | एक दिन वह अपने पति के साथ लिफ्ट में अटक जाती है, अपने सामने मौत को देखती है, तब हिम्मत कर के पति को अपना अतीत कह देती है और ऐसा महसूस करती है मानों वह कैद से मुक्त होगई हो...पर उसी क्षण वह और भी कई कैदों से घिर जाती है | उसके सामने प्रश्न हैं कि क्या उसका पति मनोज इसे सहजता से ले पायेगा...? क्योंकि समाज ने बलात्कारित स्त्री के लिए दों ही मार्ग छोड़े हैं–एक मृत्यु का और दूसरा यदि वह जिन्दा रहती है तो समाज की नफरत और अवहेलना झेल कर जिन्दा रहे | हर हालत में...जबकि स्त्री का तो अपराध ही नहीं है फिर भी...| लेखिका इन्हीं दुविधाग्रस्त स्थितियों को सुधारना चाहती हैं, जो अक्सर सिर्फ स्त्री को ही झेलनी पड़ती है | लेखिका ऐसा कर के दों महत्व के काम करती है एक तो उस स्त्री को अपराधबोध से मुक्त करना और दूसरा पुरुष की सोच को बदलना, जो अपनी पत्नी के दुर्भाग्यपूर्ण अतीत को सहजता से ले...न की इसमें अपनी पत्नी का ही दोष समझे |

इसी तरह 'एक और विवाह' की 'कोमल' जो उच्च शिक्षित और स्वतंत्र विचारों को सहेजने वाली सुन्दर लड़की है, जो दाम्पत्य जीवन के सम्बन्ध में एक ख़ास राय रखती है | लेकिन उसका विवाह बहुत ही देरी से होता है और वो भी एक ऐसे आवारा युवक से जो खुलेआम दूसरी लड़कियों से सम्बन्ध रखने में कोई ग्लानी महसूस नहीं करता है | 'दुनिया का कायदा' की 'रक्षा' कॉलेज में प्राध्यापक है फिर भी अपने पति की पदोन्नति के लिए वह उसके बोंस का अनचाहा शारीरिक स्पर्श सहन करती है | इस माहौल से वह बड़ी दुखी रहती है, लेकिन इस दुःख का निवारण वह क्यों नहीं कर सकती है..? अपने बौद्धिक जीवन को महत्व देने वाली रक्षा चुपचाप यह सब क्यों झेलती है..? लेखिका ने रक्षा के माध्यम से समाज के सम्मुख पुरुष पति का यह घिनौना रूप दिखाया है | इसी तरह 'हरी बिंदी' की नायिका अपनी अस्तित्वगत चेतना को महसूसते हुए दाम्पत्य की एकरसता को तोडना चाहती है | यह नायिका एक नई नैतिकता की मांग करती है | अपनी एकरस जिंदगी में थोड़ी सी ताजगी, थोडा सा नयापन लाने के लिए अपने नीले कुरते पाजामें पर हरी बिंदी लगा कर अपना विरोध दर्शाती है | कहानी के अंत में अगर नायिका घर जाती है तो इसका अर्थ यही है कि स्त्रियाँ अपना घर चाहती तो जरूर हैं लेकिन एक ख़ास परिवर्तन के साथ | 'उसकी कराह' की 'सुधा' बीमार है, वह अंतिम साँसें गिन रही है, दूसरी ओर उसकी सास उसके पति के दूसरे विवाह की तैयारी कर रही है |

इसके उलट "टुकडा-टुकडा आदमी" कहानी संग्रह की "दो एक फूल" कहानी की शात्तम्मा जो दूसरे के घर में नौकर का काम करती है, पति दूसरी औरतों से सम्बन्ध रखता है और किसी भयानक बिमारी का शिकार होजाता है, दुर्भाग्य से शात्ताम्मा को भी यह बिमारी होजाती है | और धीरे-धीरे मृत्यु की तरफ चली जाती है | यहाँ हम सोच सकते हैं कि समाज में स्त्रियों की स्थिति सभी जगह एक जैसी है सिर्फ उसे ही सहन करना है चाहे जो भी हो जाए...पति की बिमारी भी उसे ही झेलना है और स्वयं की मृत्यु से पहले ही पति अगर दूसरी शादी करना चाहेगा तो यह भी उसे ही सहन करना होगा | लेखिका पूछती है कि क्या.. यही है दुनिया का कायदा...? यह कैसा अलिखित कायदा है...? जिसमे स्त्री की कोई अहमियत ही नहीं ...|

"ग्लेशियर से" कहानी संग्रह की अधिकतर कहानियाँ दाम्पत्य जीवन के तनोवों को आंकने वाली हैं | इस संग्रह की कुछ कहानियाँ वैवाहिक स्त्री की एकरसता पूर्ण जिंदगी की तीव्रता को अभिव्यक्त करती है | दूसरी ओर इन स्त्रियों की घुटन से मुक्ति की छटपटाहट है; तथा इस से निजात पाने के लिए रास्तों की तलाश भी है | "ग्लेश्यिर से" कहानी की मिसेज दत्ता विवाह के पहले मुक्त, चुनौतीपूर्ण जीवन जीनेवाली चंचल युवती थी | वह हर दिन नए उत्साह के साथ गुजारती थी | विवाह के बाद उसका जीवन कुंठा से भर गया था और वह ऐसे हीं बोलने लगी जो मिस्टर दत्ता बोलते थे | उसके भीतर की उर्जस्विता समाप्त हो चुकी थी | यह कहानी मिसेज दत्ता के दाम्पत्यजीवन की एकरसता को तोडती है | उसके लिए निमित्त बना ग्लेशियर का अपरिचित पठान और वहां की प्रकृति | "तुक" कहानी की 'मीरा' दाम्पत्य जीवन में अत्यधिक घुटन महसूस करती है | आश्चर्य यह है कि घुटन सिर्फ मीरा ही महसूस करती है; उसका पति नरेश नहीं | आखिर ऐसा क्यों...यही तो नारी सुलभ प्रश्न है, जो लेखिका को उद्वेलित करता है और फिर वे और अधिक आक्रमक रूप से सोचने के लिए मजबूर होती है...कि आखिर हर बार स्त्रियों के साथ ही ऐसा क्यों होता है...? इसीलिए शायद कहानी में हद से ज्यादा मीरा ही अपनी जरूरत दिखाती रही | "खरीददार" कहानी की नीना अत्यधिक दमदार और सामर्थ्यशाली स्त्री है | शादी के बाज़ार में अपने आपको बीस हजार में बेचने से इनकार करती है और खुद खरीददार बनने का संकल्प करती है | अपने संकल्प को पूर्ण करते हुए वह खरीददार बनने की क्षमता हासिल कर ही लेती है | नीना आय.सी.एस. परीक्षा उत्तीर्ण होकर सहायक कमिश्नर से होते हुए गृह मंत्रालय की सचिव बन जाती है | लोगो को उसका सुनना भी पड़ता है और उसकी बात भी माननी पड़ती है | वह अब एक प्रकार से ताकत के रूप में उभर कर आई है..., जिसके कारण दुल्हे को खरीदने की क्षमता भी उसमें आ जाती है | "खाली" कहानी में लेखिका ने दो स्त्रियों को उपस्थित किया है | निर्मला घरेलू औरत है, घर के सारे काम निपटाने के बावजूद उसके पास खाली समय है, इस समय का क्या करे, यह प्रश्न उसके सामने है, इसीलिए वह दुखी है | दूसरी ओर निर्मला की नई किरायदार नौकरी करती है और स्वयं को व्यस्त रखती है | वह घर की जिम्मेदारियां आपस में बाँट लेती हैं | उसमें कोई अपराध-बोध नहीं है | इच्छानुकूल जी लेती है | समय को बचा कर ढेर सारी पुस्तकें पढती है | सुखी है| लेखिका ने इस कहानी में स्त्रियों के दों विरोधी चित्र उभार कर यह स्पष्ट किया है कि... यदि स्त्री अपने जीवन में सार्थकता की तलाश करती है तो वह सुखी जीवन बिता सकती है |

"मिजाज़" कहानी की 'लेखा' मिजाज़ को बहुत महत्व देती है | जिंदगी भर अपने मिजाज़ में नजाकत, निफासत कायम रखती है | लेकिन अपनी बेटी श्वेता और उसके पति के प्यार भरे रिश्ते को देखती है तो अपने जीवन का खुरदरा यथार्थ शब्दों के माध्यम से उभरकर आता है और उसके मिजाज़ को बिगाड़ ही देता है | "जिजीविषा" कहानी के आदित्य भंडारी की पत्नी अपने लकवे से बीमार पड़े पति को दुरुस्त करने में जीजान से जुटी है | दूसरी ओर उसका पति उसके चरित्र पर संदेह करने लगता है | बीमार है पति, और जिजीविषा है उसकी पत्नी की |

"शहर के नाम" यह कहानी संग्रह लेखिका का चर्चित कहानी संग्रह है | इस संग्रह की अधिकतर कहानियों में स्त्री प्रधान है | लेखिका इन कहानियों के माध्यम से कभी ग्रामीण स्त्री जीवन को उभारती है तो कभी शहरी | देहात की स्त्रियों के प्रश्न अलग है तो शहरी के अलग | पर इन्होनें देखा कि स्त्री चाहे देहात की हो या शहर की वह अपने ही घर में 'बाहरी जन' है | कभी वह विधवा की परिवर्तित मानसिकता को स्पष्ट करती हैं तो कभी समाज के लिए कुछ ना कर पाने का अपराध बोध महसूस करती है | यह अपराधबोध कभी-कभी इतना तीव्र हो जाता है कि न जीने देता है और ना ही मरने | इस तरह इस संकलन की कहानियां भी अपने कलेवर में नए-नए विषयों को लेकर आती हैं |

"मीरा नाची" की मीरा किशोरवईन लड़की है | उसके पिता ने दूसरी औरत के लिए उसकी माँ को घर से निकाल दिया था | मीरा की विशेषता यह है कि वह कोई भी काम 'अपनी चाहत' के लिए करना चाहती है | नारी को 'अपनी चाहत' को महत्व देना होगा | इसी में उसके विकास के बीज छिपे हुए है | किसी के कहने पर और किसी के लिए करने में आधीनता का भाव है, तथा अपनी चाहत में स्वाधीनता का भाव है | अपनी चाहत के बिना किसी भी व्यक्ति का विकास संभव नहीं है | मीरा की कहानी स्त्री की स्वाधीनता के मर्म की कहानी है | कहानी के अंत में मीरा 'अपने लिए' मन लगा कर पढने का निर्णय लेती है |

अंत में... "समागम" लेखिका का अंतिम कहानी संग्रह है | मृदुलाजी के सम्पूर्ण कहानी संग्रह को पढ़ कर पाठक सोचता ही रह जाता है कि...कब नारी कैद में गई और कब मुक्त हुई..और अब समागम भी हो रहा है ..| इस तरह से कहानी के क्षेत्र में लेखिका की 'कितनी कैदें' से शुरू हुई यात्रा 'समागम' तक पहुँच गयी है | 'समागम' इस कहानी संग्रह में दाम्पत्य तनाव के सूक्ष्म सन्दर्भ हैं, अकेलेपन का खौफ है और शोषण के खिलाफ लडाई जारी है | अंत में हम नारी को मनुष्य समझने की बात का समर्थन करते हुए सुभद्राकुमारी चौहान के इन विचारों को पाठकों के समक्ष रखेंगे–"स्त्रियों के सहयोग के बिना मानव साहित्य सम्पूर्ण नहीं हो सकता | एक पुरुष किसी पुरुष की अनुभूतियों को सफलता पूर्वक प्रकट कर सकता है किन्तु प्रकट करने की बात अगर स्त्रियों की अनुभूतियों की हो तो उसे कल्पना का सहारा लेना पड़ता है |"

सन्दर्भ सूची

1) मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी -डॉ.रमा नवले
2) मृदुला गर्ग का कथा साहित्य और नारी -डॉ.राजू बागलकोट
3) मृदुला गर्ग के साहित्य में चर्चित नारी -डॉ.किरणबाला जाजू

4) भाषा और साहित्य के विभिन्न आयाम–डॉ.रमा नवले
5) वैश्विकता के संदर्भा में हिंदी -डॉ.शैलजा पाटिल
6) हरी बिंदी–मृदुला गर्ग
7) शहर के नाम---मृदुला गर्ग
8) खाली---मृदुला गर्ग
9) कितनी कैदें---मृदुला गर्ग
10) मीरा नाची---मृदुला गर्ग
11) मिजाज़–मृदुला गर्ग
12) खरीददार–मृदुला गर्ग
13) तुक–मृदुला गर्ग